पुतलों में इंसानियत [Humanity in a statue]
Sagar Borker, MD
Assistant Professor,
Department of Community Medicine, PGIMER and Dr RML Hospital, New Delhi
Corresponding Author:
Dr Sagar Borker
Department of Community Medicine, Dr RML Hospital, New Delhi
Email: sargarborker at gmail dot com

भूलाव वाली इस दुनिया में,
क्या शुद्ध है क्या दूषित,
शुद्धता में दूषितपन खोजे,
या दूषितता में शुद्ध चरित्र।

दूध में मिले पानी, यूरिया, स्टार्व और रसायन,
या मिले बाजार में केमिकल जो दूध जैसा दिखे;
फिर भी हर घर में माँ रोज सुबह मन्नत मांगे,
मेरा बच्चा एक गिलास दूध जरूर पिये।

राजधानी की खुशमिजाजी में धूआँ युं उठे,
हवा को वह अपनी काली चपेट में लेजाये,
बच्चे इसी घरे कोहरे में पाठशाला जायें,
फिर भी हर घर में माँ रोज सुबह मन्नत मांगे,
मेरा बच्चा पढ़-लिख कर एक बड़ा अफसर बने।

राज घराने के ठाट हैं आज-कल के बच्चों के
खाने में "KFC", पीने में "Coke, Pepsi" खेल में "PUBG",
फिर भी हर घर में माँ रोज सुबह मन्नत मांगे,
मेरा बच्चा घर ही रोटी सब्जी खाये।

Cite this article as: Borker S. Putlon mein insaniyat [Humanity in a statue]. RHIME. 2019;6:41-2. Hindi

www.rhime.in
फल पे भोग, मछली में फोर्मलिन,
भाजी, सब्जी तरकारी में कीटनाशक,
मटन में कुर्ले का मांस, चिकन में एंटीबायोटिक,
मक्खन में पशुओं की चबीं,
फिर भी हर घर में माँ रोज सुबह मन्नत मांगे,
मेरा बच्चा खूब खा-पी कर अच्छा तंदुरस्त बने।

लक्जी इस दुनिया में इज़जत भी मिलावटी, शोहरत भी,
परीक्षा में पास होना महत्वपूर्ण, जान भुले ही फर्जी,
व्यू दूथ और फोर जी के जमाने में सब लगता है इज़जी,
फिर भी हर घर में माँ रोज सुबह मन्नत मांगे,
मेरा बच्चा हर परीक्षा में अव्याख्यात नंबर लाये।

बड़े बड़े पुतले बन रहे हैं भारतवर्ष की पावत भूमि पर
इंसानों में मानवता ना खोजे, खोजें पुतलों में इंसानियत।
फिर भी हर घर में माँ रोज सुबह मन्नत मांगे,
मेरा बच्चा नेक और अच्छा इंसान बने।

संसार में इतनी निराशा होने के बावजूद भी,
माँ की आशा वरकरार रहे,
लक्जी इस दुनिया में
ममता ही असली मानवता कहलाए।